पौष-चैत्र, २०७९-८०
जनवरी-मार्च, 2023

विन्देम देवतां वाचम्

ISSN : 0378-391X
भाग-84, अंक: 1
यूजीसी केयर लिस्ट में सम्मिलित

हिन्दुस्तानी

त्रैमासिक

शताब्दी की ओर

आज़ादी का अमृत महोत्सव

G20 भारत 2023 INDIA
वसुधैव कुटुम्बकम्
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

स्वतंत्रता संग्राम पर केन्द्रित विशेषांक

हिन्दुस्तानी एकेडेमी उ.प्र. प्रयागराज

अनुक्रम

- **सम्पादकीय** ... 5
- **आलेख**
  - स्वतंत्रता आन्दोलन में प्रयागराज की भूमिका –पं. रामनरेश तिवारी 'पिण्डीवासा' ... 7
  - प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से उत्पन्न चुनौतियाँ और हिन्दी रचनाकारों की सजगता –रामकिशोर शर्मा ... 10
  - भारत का स्वतंत्रता संग्राम और सुभद्रा कुमारी चौहान –विनम्र सेन सिंह ... 16
  - गुमनाम शहीद लाल प्रताप –आद्याप्रसाद सिंह 'प्रदीप' ... 20
  - उत्तर-पूर्व के स्वतंत्रता रण-बाँकुरे –श्री प्रकाश मिश्र ... 23
  - काकोरी ट्रेन एक्शन के सेनानी –संजय शर्मा ... 35
  - स्वतंत्रता संग्राम के अमर सेनानी राम मनोहर सिंह गहरवार –अनुज प्रताप सिंह ... 40
  - स्वतंत्रता-आंदोलन में साहित्य की भूमिका –विवेक सत्यांशु ... 43
  - आजादी के सफर में वीरांगना रानी गाइदिन्ल्यू की भूमिका एवं योगदान –संजय कुमार सिंह ... 46
  - स्वाधीनता आन्दोलन में हिन्दी की भूमिका –सभापति मिश्र ... 51
  - हिन्दी उपन्यासों पर स्वाधीनता आंदोलन का प्रभाव –सुजीत कुमार सिंह ... 58
  - भारतीय स्वाधीनता संग्राम और बंगाल की महिला क्रांतिकारी : एक विश्लेषण–प्रिया तिवारी ... 62
  - लोकगीतों में स्वाधीनता सेनानियों की स्मृति –सत्यप्रिय पाण्डेय ... 66
  - ब्रिटिश संसद तक आजादी की गूँज पहुँचाने वाले क्रांतिकारी वीर : श्री परमेश्वरी दयाल –स्मिता अग्रवाल ... 73
  - बंगाल की गुमनाम स्वतंत्रता सेनानी मातंगिनी हाजरा उर्फ बूढ़ी गाँधी –नीरज शर्मा ... 77
  - आजादी का अमृत और महादेवी का चिंतन –भुवाल सिंह ठाकुर ... 82
  - स्वातंत्र्य समर में उत्तर प्रदेश के पाँच गुमनाम वीर योद्धा –संतोष कुमार तिवारी ... 88
  - मन्मथनाथ गुप्त : एक साहित्यकार का क्रांतिकारी जीवन –नीरज कुमार सिंह ... 92
  - स्वतंत्रता आंदोलन के गुमनाम क्रांतिकारी –अरुण कुमार त्रिपाठी ... 96
  - भारत के स्वाधीनता महायज्ञ में महिलाओं का योगदान –नन्दराम ... 104
  - भारतीय स्वाधीनता संग्राम में नारी प्रतिरोध के विविध स्वर –कमलेश सिंह ... 110
  - भारत छोड़ो आन्दोलन की विस्मृत वीरांगनाएँ (उत्तर प्रदेश के झाँसी, हमीरपुर और जालौन जिले के विशेष संदर्भ में) –रागिनी राय ... 114
  - भारतीय स्वाधीनता संग्राम और हिंदी साहित्य – विजयानन्द ... 119
  - आज़ादी की लड़ाई में आदिवासियों का योगदान – बन्ना राम मीना ... 123
  - स्वाधीनता आन्दोलन और साहित्यिक भाषा के रूप में खड़ी बोली हिन्दी – चितरंजन कुमार ... 129
  - सुभद्रा कुमारी चौहान के काव्य में राष्ट्रीय चेतना –मुदिता तिवारी ... 133

काकोरी ट्रेन एक्शन के सेनानी

संजय शर्मा

देश की आजादी के 75वें वर्षगाँठ के अवसर पर 'आजादी के अमृत महोत्सव' का आयोजन भारत सरकार ने किया। यह आजादी हमें आसानी से नहीं मिली। इसकी खातिर लाखों लोगों ने अपने प्राणों की आहूति दी व स्वतंत्रता के मतवालों ने अपना सब कुछ न्यौछावर कर दिया। इस अवसर पर भारतीय प्रधानमंत्री ने कहा, 'आजादी के अमृत महोत्सव का अर्थ है–स्वतंत्रता की ऊर्जा का अमृत, स्वतंत्रता संग्राम के योद्धाओं की प्रेरणा का अमृत, नए विचारों और प्रतिज्ञाओं का अमृत और आत्मनिर्भरता का अमृत।[1] उन्होंने आगे कहा कि, यह महोत्सव राष्ट्र जागरण का पर्व है, यह सुशासन के सपने को साकार करने का त्यौहार और वैश्विक शांति एवं विकास का त्यौहार है।[2] उत्तर प्रदेश सरकार ने भी विविध कार्यक्रम आयोजित किए। अपने आमंत्रण पत्र में उत्तर प्रदेश सरकार ने 9 अगस्त, 1925 को हुए बहुचर्चित काकोरी ट्रेन लूटकांड को 'काकोरी ट्रेन एक्शन' नाम दिया। सरकार ने कहा कि 'यह बदलाव जरूरी' था। 'काकोरी ट्रेन लूटकांड' नाम अपमानजनक लगता है। यह बदलाव स्वागत योग्य है। शोधपत्र में 'काकोरी ट्रेन एक्शन' में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले सेनानियों के कार्यों का अध्ययन किया गया है। शोधपत्र में 'काकोरी ट्रेन लूट' की जगह 'काकोरी ट्रेन एक्शन' शब्द प्रयोग में लाया गया है।

भारत के जनमानस ने ब्रिटिश शासन की अधीनता को कभी भी सहज रूप में स्वीकार नहीं किया। 1757 के प्लासी युद्ध के बाद अंग्रेजों ने अपने पैर भारत में पसारने शुरू कर दिये। कहा जाता है जहाँ दमन, उत्पीड़न व हिंसा है, वहीं संघर्ष और प्रतिरोध की आग भी है। प्लासी युद्ध के बाद भारत में अंग्रेजों का सशस्त्र विरोध होना आरंभ हो चुका था। 1757 से 1857 के काल में अनेक विद्रोह हुए। इस परम्परा में पहला विद्रोह संन्यासियों ने किया जो कि 1763 में हुआ और 1800 ई. तक चला। इस काल में अन्य महत्त्वपूर्ण विद्रोह थे–फकीरी आन्दोलन (1776), बंगाल का रंगपुर विद्रोह (1783), मद्रास के विजयनगर के राजा का विद्रोह (1783), बंगाल और बिहार का चुआर संघर्ष (1766-1772), पागलपंथी आन्दोलन (1837), कोलसंघर्ष (1831-32), संथाल विद्रोह (1855) व प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन (1857), बंगाल के किसानों का नील विद्रोह (1859), कूका संघर्ष (1869-1872), पावना व महाराष्ट्र का किसान संघर्ष (1872-1885), महाराष्ट्र किसान आन्दोलन (1875), फड़के का संघर्ष (1879), रम्पाविद्रोह (1879), झारखंड आदिवासी बिरसामुंडा विद्रोह (1899)। ये विद्रोह स्वतंत्रतासंग्राम के प्रारंभिक चरण के सशस्त्र विद्रोह थे। इस सशस्त्र संघर्षों के नायकों में मुख्य थे–मंगल पाण्डेय, बहादुर शाह जफर, बेगम जीनत महल, कुँवर सिंह, नानासाहब, महारानी लक्ष्मीबाई, बेगम हजरतमहल, मनीराम, सुरेन्द्र शाही, उज्ज्वल शाही, रंगोली, बापूजी गुप्ता, तात्या टोपे, राम सिंह कूका, ईशानचन्द्रराय, केशवचन्द्र राय, शंभूनाथ पाल, बाबासाहब देशमुख, बासुदेवबलवंत फड़के, दौलतरामरामोशी, गोविन्दरावदावरे, टिकेन्द्रजित सिंह, बिरसामुंडा व मनकीदेवी।[3]

पहले विश्वयुद्ध के बाद सशस्त्र संघर्ष की गति मंद पड़ने लगी। क्रान्तिकारी विद्यार्थी व किसान गाँधीजी के पद चिह्न पर चलने लगे। 1922 ई. में चौरी-चौरा की घटना के बाद गाँधीजी ने असहयोग आन्दोलन को स्थगित कर दिया इससे युवाओं में हताशा व निराशा बढ़ गयी। युवाओं का भरोसा गाँधी की अहिंसा की नीति से डिगने लगा। परिणामस्वरूप 'युगान्तर' एवं 'अनुशीलन' समितियों जैसी पुरानी क्रान्तिकारी

समितियों का पुनः प्रादुर्भाव[4] हुआ और सशस्त्र संघर्ष के लिए उत्तर प्रदेश, बिहार तथा बंगाल के युवाओं की धमनियों में रक्त उबाल मारने लगा। युवा विश्वपटल पर घटित हुई रूसी क्रान्ति से प्रभावित थे और बोल्शेविक दल से मदद लेने के हिमायती थे।[5] इन घटनाओं ने क्रान्तिकारियों को संगठित होने पर मजबूर किया और पुनः सशस्त्र संघर्ष आरंभ हुआ। इस काल में हिंदुस्तान रिपब्लिक एसोसिएशन की स्थापना (1924), काकोरी ट्रेन एक्शन (1925), चिटगाँव शस्त्रागार हमला (1929), साण्डर्स वध (1928), असेम्बली बमकांड (1929), दशहरा बम कांड (1926), जैसी घटनाओं को शहीदों ने अंजाम दिया। इस काल में स्वतंत्रता की वेदी पर शहीद होने वाले कुछ महत्त्वपूर्ण क्रान्तिकारी थे–शचीन्द्रनाथ सान्याल, रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, भगवतीचरण, सुखदेव, अशफाकउल्ला, राजेन्द्र लाहिड़ी, रोशन सिंह, राजगुरु जयगोपाल, बटुकेश्वरदत्त, सूर्यसेन, मेनन सिंह, अम्बिका चक्रवर्ती, कल्पना दत्त, प्रीति लता बाउदेर, भगवतीचरण वोहरा, ऊधम सिंह।

इस चरण में सशस्त्र संघर्ष के लिए 'हिन्दुस्तान रिपब्लिक एसोसिएशन' की स्थापना एक महत्वपूर्ण कदम था। नवम्बर 1918 को पहला विश्वयुद्ध समाप्त हुआ। तत्पश्चात् आम माफी के तहत 'बनारस षड़यंत्र केस' में आजीवन सजा प्राप्त शचीन्द्रनाथ सान्याल, सेठ दामोदर स्वरूप तथा सुरेश भट्टाचार्य को 1920 ई. में जेल से मुक्त कर दिया गया।[6] क्रान्तिकारियों ने महसूस किया कि अखिल भारतीय स्तर पर एक क्रान्तिकारी दल की स्थापना जरूरी है।

सन् 1924 ई. में उग्रविचारों के पोषक क्रान्तिकारियों का कानपुर में संगम आहूत हुआ, जिसमें शचीन्द्रसान्याल, रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, भगवतीचरण एवं भगत सिंह आदि क्रान्तिकारियों ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई और सभी की सहमति से 'हिन्दुस्तान रिपब्लिक एसोसिएशन' (H.R.A.) की स्थापना की गयी।[7] सशस्त्र विद्रोह के लिए धन की जरूरत थी। धनार्जन का कोई अन्य विकल्प नहीं था। एकमात्र विकल्प सरकारी खजाने को लूटना था।

सुधीर विद्यार्थी के पुस्तक से उद्धृत बिस्मिल के अनुसार, "सबपर कुछ न कुछ कर्ज हो गया था। किसी के पास साबुत कपड़े तक न थे, कुछ विद्यार्थी बनकर धर्म क्षेत्रों तक में भोजन कर आते थे।"[8] साथ ही हथियारों की खरीद अपरिहार्य हो चुकी थी। इस अभिकथन के समर्थन में मलवेन्द्रजीत बड़ैच एवं सीताराम बंसल की पुस्तक में वर्णित बिस्मिल के कथनानुसार "सन् 1925 तक उत्तर प्रदेश में क्रान्तिकारी संगठन मजबूत हो गया था और संगठन कार्यों में तेजी भी आ गयी थी। जुलाई के अन्त में हमें खबर मिली की जर्मनी से पिस्तौलों का पार्सल आ रहा है। कलकत्ता बन्दरगाह पहुँचने से पहले ही नकद रुपया देकर उसे प्राप्त करना था : एतदर्थ काफी रुपयों की आवश्यकता पड़ी और पार्टी के सामने डकैती के अलावा कोई अन्य चारा नहीं था।"[9] तत्पश्चात् बिस्मिल, अशफाक, शचीन्द्रनाथ बख्शी, राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी, रवीन्द्रमोहनकर, रोशनसिंह ने 7-8 अगस्त सन् 1925 ई. को शाहजहाँपुर में गुप्त मंत्रणा कर 8 डाउन रेल में जो शाहजहाँपुर से लखनऊ तक जाती थी, में रखे खजाने को काकोरी स्टेशन पर लूटने की योजना तैयार की।[10]

योजना के अनुरूप 9 अगस्त सन् 1925 ई. के क्रांतिकारियों का हथियारबन्द दस्ता बिस्मिल के नेतृत्व में 'जर्मनी निर्मित 4 माउजर पिस्तौल'[11] तथा छेनी हथौड़े के साथ उनमें सवार हुए और काकोरी स्टेशन के समीप गाड़ी के पहुँचने पर शचीन्द्रनाथ एवं राजेन्द्र लाहिड़ी ने चेन खींचकर 52 नं. खम्भे के पास गाड़ी को रोक दिया।[12] क्रान्तिकारियों ने पिस्तौल से फायर कर यात्रियों को संबोधित करते हुए कहा कि हमारा ध्येय किसी को नुकसान पहुँचाना नहीं है, हम सिर्फ सरकारी खजाना लूटेंगे। कोई यात्री ट्रेन से बाहर न निकले। क्रान्तिकारियों ने ट्रेन में तैनात गार्ड को पिस्तौल के बल पर घास पर लिटा दिया। इसी बीच एक ट्रेन यात्री जिसकी पत्नी दूसरे डिब्बे में बैठी हुई थी, के पास जाने के लिए अचानक उतरा और क्रांतिकारियों से भूलवश उस एकमात्र व्यक्ति जिसका नाम अहमद अली था, गोली का शिकार हो गया।[13] क्रांतिकारियों ने ट्रेन खजाने के सन्दूक को बाहर निकाल लिया और उसको तोड़कर खजाने को एक चादर में लपेट कर वहाँ से निकल गये।[14] दिट्रिब्यून के अनुसार–काकोरी ट्रेन एक्शन धन के थैले से 4553 रुपये 3 आने 60 पैसे निकले।[15] सरकार द्वारा काकोरी में शीलापट के अनुसार लूट ढाई हजार की हुई थी।[16]

अगले दिन डेली टेलीग्राफ, दि ट्रिब्यून तथा इंडियन जैसे प्रमुख समाचारपत्रों ने इस ट्रेन एक्शन के समाचार को प्रमुखता से छापा। सरकार द्वारा सार्वजनिक स्थानों, पुलिस थानों तथा स्टेशन पर पर्चे लगवा दिये गये। जिसमें लिखा था– रेल डकैती के संदर्भ में सूचित करने वाले व्यक्ति को 5000 रुपये का पुरस्कार दिया जायेगा।' खुफिया विभाग के आर. ए. हर्टनजोतत्समय उपनिरीक्षक के पद पर तैनात थे। उन्होंने 25

सितम्बर 1925 ई को ग्यारह संदिग्ध व्यक्तियों की गिरफ्तारी का आदेश निकलवाया और सर्वप्रथम 26 सितम्बर को लखनऊ में 'गोविन्दचरण' को भी द रिवोल्यूशन के पर्चे के साथ पकड़ लिया गया।[17] पुलिस प्रशासन व गुप्तचर विभाग ने 40 लोगों को पकड़ा और उन पर सरकार ने अभियोग चलाया।

इतिहास में इस केस को 'काकोरी केस' कहा गया जिसका नाम बदलकर सरकार ने 'काकोरी ट्रेन एक्शन' कर दिया। काकोरी ट्रेन एक्शन में जो सजा सुनाई गयी उसमें राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खाँ, राजेन्द्र लाहिड़ी एवं रोशन सिंह को फाँसी का दण्ड मिला। मन्मथनाथ गुप्त को 14 वर्ष की सजा मिली। इस केस में 11 क्रांतिकारियों को कड़ी सजा दी गई। ये सजायें शाहजहाँपुर के 'इन्द्रभूषण' तथा 'बनारसीलाल' (बनवारी लाल) की गद्दारी की वजह से हुई। बनवारी लाल इकबाली गवाह तथा कानपुर के गोपीनाथ सरकारी गवाह बन गए। बिस्मिल ने अपनी वेदना प्रकट करते हुए इन लोगों की तुलना उस जहरीले सर्प से की है जिसे वे अपने गले का हार समझ अपने गले में डाले रहे।[18]

रामप्रसाद बिस्मिल को गोरखपुर कारागार के अन्दर 19 दिसम्बर 1927 ई. को फाँसी दी गयी। फाँसी दिये जाने के कुछ दिन पहले बिस्मिल ने अपने मित्र को एक पत्र लिखा। जिसमें उन्होंने यह ओजस्वी कविता की पंक्तियाँ लिखीं–

"यदि देशहित मरना पड़े मुझको सहस्त्रों बार भी।
तो भी न मैं इस कष्ट को निज ध्यान में लाऊँ कभी।।
है ईश ! भारतवर्ष में शतबार मेरा जन्म हो।
कारण सदा ही मृत्यु का देशोपकार कर्म हो।।"[19]

बिस्मिल ने अपने मित्र को बताया कि मैं इस स्थिति के लिए सहर्ष तैयार हूँ। आखिर यह सब है ही क्या सिर्फ शरीर का रूपान्तरण मात्र ही तो है। मुझे आशा ही नहीं पूरा भरोसा है कि मेरी आत्मा मातृभूमि की सेवा के लिए पुनः लौटकर आयेगी। क्रान्तिकारी बिस्मिल एक उत्कृष्ट लेखक व शायर थे; उनकी कुछ ख्यातिप्राप्त रचनायें 'मन की लहर', 'बोल्शेविकों की करतूत', 'स्वदेशी रंग', 'देशवासियों के नाम संदेश' तथा 'अमेरिका को स्वतंत्रता कैसे मिली' आदि हैं।

धार्मिक एकता के रंग में रंगे वे स्वयं को राम प्रसाद 'बिस्मिल' कहलाना पसंद करते थे। जेल में ही उन्होंने अपनी आत्मकथा लिखी। फाँसी के तख्ते की ओर जाते हुए उन्होंने वन्देमातरम् व भारत माता की जय का नारा लगाया। अंग्रेजी राज के पतन की कामना की एक शेर कहा–"अब न अहलेवल्वले हैं, और न अरमानों की भीड़; एक मिट जाने की हसरत, अब दिले बिस्मिल में है।"[20]

कारागार प्रमुख ने जब बिस्मिल से पूछा कि कोई आखिरी इच्छा हो तो बताओ ? इस बात पर उन्होंने बड़ी दृढ़ता से उत्तर दिया–"मैं ब्रिटिश राज्य के पतन का आकांक्षी हूँ और आँख बन्द कर उच्चारण किया–

विश्वानिदेवसवितर्दुरितानिपरासुव।
यद् भद्रंतन्नः आसुव।।"[21]

इसके साथ ही तख्ता खींचकर बिस्मिल को फाँसी दे दी गयी।

रामप्रसाद बिस्मिल के साथी अशफाकउल्ला खाँ को भी काकोरी ट्रेन एक्शन में फाँसी की सजा हुई थी। इन्हें जेल में मुस्लिम एस.पी. द्वारा इनके मुस्लिम होने के बाद भी रामप्रसाद बिस्मिल (एक हिन्दू) का साथ देने पर आपत्ति की गई एवं बिस्मिल के विरुद्ध भड़काने का प्रयास किया गया था। तब इन्होंने कहा था कि बिस्मिल मेरे भाई के सदृश हैं और अंग्रेजों की गुलामी से बेहतर है हम स्वतंत्र होकर हिन्दू राष्ट्र में रहें।[22] अशफाकउल्ला खाँ ने अपने संदेश में कहा था कि बहुतेरे लोगों के द्वारा क्रांतिकारियों को आतंकवादी माना जाता है एवं प्रचार किया जाता है कि हम देश को आतंकित कर रहे हैं; जबकि यथार्थ में क्रांतिकारी वीरता का पर्याय होते हैं। क्रांतिकारियों द्वारा सिर्फ अँग्रेजों की दासता के विरुद्ध हिंसा की गयी, कभी किसी निर्दोष की हत्या नहीं की गई। हम लोगों ने कभी किसी सरकारी गवाह तक की हत्या नहीं की। काकोरी ट्रेन लूट में जिस अहमद अली नाम के व्यक्ति को मन्मथनाथ द्वारा भूलवश गोली मारी गयी थी। वह दुर्भाग्यपूर्ण घटना थी, क्योंकि दुर्भाग्यवश अहमद अली की पत्नी दूसरे डिब्बे में थी और वह उसके पास जा रहा था और भ्रमवश उसकी हत्या हो गयी।[23]

अशफाकउल्ला ने कहा, हमारे द्वारा जो भी सही या गलत कदम उठाये गये। उनके पीछे स्वतंत्रता की भावना रही। हमारे कृतित्व एवं व्यक्तित्व की कोई निंदा करेगा तो कोई स्तुति करेगा। इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ेगा, किन्तु हिन्दू-मुस्लिम के भेद-भाव से रहित होकर एक होकर अंग्रेजी सत्ता का विरोध कीजिए। इस बारे में आचार्य भगवानदेव का कहा है, मैं हत्यारा हीं हूँ जैसा कि मुझे प्रदर्शित किया गया है। मैं प्रथम भारतीय मुसलमान हूँ, जो स्वतंत्रता के लिए फाँसी पर चढ़ रहा हूँ।"

अशफाकउल्ला खाँ को 19 दिसम्बर सन् 1927 ई. को फैजाबाद जेल में फाँसी दे दी गयी। फाँसी दिये जाने के पूर्व उन्होंने कुछ पद्य की रचना रची जो कि देशप्रेम के भाव से भरे थे। इस मातृभूमि के वीरसपूत की पंक्तियाँ हैं–

"कुछ आरजू नहीं, है आरजू तो यह
रख दे कोई जरा-सी खाकेवतन कफन में।
ऐपुख्तकारउल्फलहथियार, डिग न जाना,
मराजआशकाँ है इस दार और रसन में।।"[24]

चन्द्रशेखर आजाद के जीवन में यदि सबसे पहला कोई बड़ा क्रांतिकारी कदम माना जाये तो वह था 'काकोरी ट्रेन एक्शन' आजाद जी इसमें जरूर रहे किन्तु इस एक्शन का नेतृत्व राम प्रसाद बिस्मिल के हाथों में था। आजाद के शीघ्र उत्तेजित होने के स्वभाव के कारण बिस्मिल उन्हें 'क्विकसिल्वर' (पारा)[25] कहकर पुकारते थे।

काकोरी ट्रेन एक्शन में भी पुलिस आजाद को गिरफ्तार नहीं कर पायी और घटना को अन्जाम देने के पश्चात वह गुप्त रूप से झाँसी पहुँच गये। वे गुप्त रूप में झाँसी में रहकर क्रांतिकारी दल का नेतृत्त्व करते रहे किन्तु जब झाँसी में पुलिस की हलचल ज्यादा तेज हुई तो उन्होंने ओरछा की ओर प्रस्थान किया और एक ब्रह्मचारी के रूप में कुटिया में निवास करने लगे। आजाद जी का लम्बे समय तक पुलिस की गिरफ्तारी से बचने रहने का प्रमुख कारण यह भी था कि पुलिस की सक्रियता बढ़ने पर वे शहर छोड़कर गाँवों की ओर खिसक जाते थे।[26] जिससे उन्हें ढूँढ़ना कठिन हो जाता था।

'काकोरी ट्रेन एक्शन' के बाद चन्द्रशेखर आजाद ने क्रांतिकारी दल का नाम बदलकर 'हिन्दुस्तानी सोशलिस्ट रिपब्लिक एसोसिएशन' (एच.एस.आर.ए.) रख दिया था। इसको हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी भी कहा जाता है। अब इसका नेतृत्त्व आजाद जी के हाथों में था।

इसके बाद उन्होंने सन् 1928 ई. में साइमन कमीशन का विरोध करते हुए लालालाजपतराय पर लाठियाँ बरसाने का बदला साण्डर्स वध में सहनायक के रूप में रह कर लिया। चन्द्रशेखर आजाद के कुशल नेतृत्त्व में ही '8 अप्रैल 1929'[27] को भगत सिंह और बटुकेश्वरदत्त ने दिल्ली की केन्द्रीय असेम्बली में बम फेंका।

'काकोरी ट्रेन एक्शन' आजादी की लड़ाई को सशस्त्र चलाने के लिए अपरिहार्य था। क्रान्तिकारी आर्थिक तंगी से जूझ रहे थे। अपने पवित्र ध्येय को पूरा करने के लिए अपनाया गया यह तरीका जायज था। कुछ क्रान्तिकारियों द्वारा इस घटना को अंजाम दिया गया तो अंग्रेजी हुकूमत हिल गयी। आजादी का बिगुल फूँकने में काकोरी ट्रेन एक्शन की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही। 'काकोरीलूटकांड' नाम अपमानजनक लग रहा था। सरकार ने इसें बदलाव कर सच्चे अर्थों में उनको श्रद्धांजलि दी। इन आजादी के मतवालों ने इस घटना में किसी निर्दोष की हत्या नहीं की। उन्होंने लुटेरों के खिलाफ एक्शन लिया। 'काकोरी ट्रेन एक्शन' आजादी की लड़ाई में मील का पत्थर साबित हुआ और क्रांतिकारियों का हौसला बढ़ा।

संदर्भ :

1. https://amritmahotasav.nic.in देखा गया 20.8.22
2. वही
3. अयोध्या सिंह, 'भारत का मुक्तिसंग्राम', प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, 1995, पृ. 430
4. मंजू जौहरी, 'भारतीय संघर्ष में सरदार भगत सिंह की भूमिका', केन्द्रीय पुस्तकालय बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी, 2014, पृ. 70
5. विपिनचन्द्र व अन्य, 'भारत का स्वतंत्रता संघर्ष', हिन्दी कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली, 2015, पृ. 228
6. प्रकाशनारायण पाठक, 'भारतीय क्रान्तिकारी एवं स्वाधीनतासंघर्ष', न्यूरॉयल कम्पनी, लखनऊ, 2004, पृ. 145
7. कामेश्वर प्रसाद, 'हिस्ट्री ऑफ इंडिया : 1757 टू 1950 ए.डी., भारतीभवन पटना, 2003, पृ. 296
8. मन्मथनाथ गुप्त, 'भारतीय क्रान्तिकारी आंदोलन का इतिहास', आत्माराम एंड सन्स दिल्ली, 204
9. मलवेन्द्रजीत बढ़ैच, सीताराम बंसल 'राम प्रसाद बिस्मिल को फाँसी व महावीर सिंह का बलिदान', राजकमल पेपर बैक्स, दिल्ली, 2013, पृ. 67
10. काकोरी कांसेपरेंसीजजमेंट ट्रायल नं. 01, 1926, यू.पी. स्टेट आरचिव, लखनऊ, पेज 30
11. https://worldguns.ru/handguns/ng.go-e.htm.
12. आबिद रिजवी 'देश के अमर सेनानी', प्रगति प्रकाशन, मथुरा, 2009, पृ. 76
13. काकोरी कांसपेरेंसीजजमेंट, पृ. 69
14. एस.एल. नागौरी, ब्रिटिश साम्राज्यवाद : भारतीय प्रतिशोध एवं स्वतंत्रता आंदोलन, मलिक कंपनी प्रकाशन, जयपुर, 1993, पृ. 69

15. द ट्रिब्यून, लाहौर, 12 अगस्त, 1925
16. दैनिक भास्कर, 'काकोरी कांड : जानिए कितने रुपये की हुई थी लूट' https:// www.bhaskar.com/news/up-Luck-kakori-case-know-how-much-money-looted-4708512-PHO.html.
17. काकोरी कांसेपरेंसी, वही, पृ. 1-2
18. सत्यनारायण शर्मा (संपा.), 'रामप्रसाद बिस्मिल की आत्मकथा', साक्षी प्रकाशन दिल्ली, 2015, पृ. 384
19. अवधेश मिश्र, 'जो फाँसी का फंदा चूम गये', हिन्द पाकेट बुक्स, नई दिल्ली 2010, पृ. 67
20. मदन लाल वर्मा, 'स्वाधीनता संग्राम के क्रान्तिकारी साहित्य का इतिहास' भाग–1, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006, पृ. 321
21. अवधेश मिश्र, वही, पृ. 68
22. व्यथित हृदय, 'स्वाधीनता संग्राम के क्रान्तिकारी सेनानी', सामयिक प्रकाशन, दिल्ली, 1988, पृ. 117
23. बनारसीदास चतुर्वेदी (संपा.), रामप्रसाद बिस्मिल : आत्मकथा, नवनीत प्रकाशन, नई दिल्ली, 1985, पृ. 90
24. मन्मथनाथगुप्त, वही, पृ. 207
25. https://bharatdiscovery.org/india/ चन्द्रशेखर आजाद और छाप्रवास।
26. वही
27. सुधीर विद्यार्थी 'असेम्बली बम कांड के सहनायक बटुकेश्वरदत्त', लोक प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृ. 8

■